under investigation by military and other authorities. And it is difficult for me to say whether it was caused due to mischief by the Naga hostiles or by Pakistani infiltrators.

ANNOUNCEMENT BY CHAIRMAN *RE* RESIGNATION BY A MEMBER

MR. CHAIRMAN: I have to inform Members that Dr. Nihar Ranjan Ray, a Member representing the State of West Bengal, resigned his seat in the Rajya Sabha with effect from June, 1, 1965.

REFERENCE TO INDO-PAKISTAN AGREEMENT RELATING TO GUJARAT-WEST PAKISTAN BORDER

MR. CHAIRMAN: Shri Vajpayee.

श्री गोडे मुराहरि : अभी बिहार में जो हुआ है . . .

MR. CHAIRMAN: Please wait. Shri Vajpayee has notified to me that he wants to say something.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (उत्तर प्रदेश) : इससे पहले कि आगे की कार्यवाही हो, मैं एक महत्वपूर्ण मुद्दे की ओर आपका ध्यान खींचना चाहता हूं । 3 मई को इस सदन में कच्छ पर पाकिस्तान के हमले के बारे में बहस हुई थी और सदन ने एक संकल्प किया था, एक प्लेज ली थी । मैं उसका एक अंश पढ़ कर सुनाना चाहता हूं :—

"... with hope and faith, this House affirms the firm resolve of the Indian people to drive out the aggressor from the sacred soil of India."

आज जब सदन की बैठक शुरू हुई, तो हम यह आशा कर रहे थे कि सरकार इस स्थिति में होगी कि हमें बतायेगी कि यह प्लेज पूरी हो गई है । लेकिन सरकार ने इस प्लेज को तोड़ दिया, कच्छ में पाकिस्तान को गश्त लगाने का अधिकार दे कर सरकार इस प्लेज से पीछे हट गई । सभी इस बात को स्वीकार करेंगे कि जब सरकार ने एक एक इंच भूमि को पाकिस्तान से मुक्त कराने की बात कही थी तब बीस मील पर गश्त करने का अधिकार पाकिस्तान को कैसे दिया जा सकता है ।

दूसरी बात । बहस में प्रधान मंत्री जी ने कहा था, मैं उनके शब्द आपके ध्यान में लाना चाहता हूं :—

"I must reiterate clearly and emphatically that the Government of India do not recognise that there is any territorial dispute about the Rann of Kutch."

लेकिन कच्छ के बारे में जो पाकिस्तान से समझौता किया गया है उसमें तीन हजार पांच सौ वर्गमील के ऊपर पाकिस्तान के दावे को इंटरनेशनल ट्राइब्युनल को सौंप दिया गया है । वह ट्राइब्युनल हमारे खिलाफ फैसला दे सकता है । यह तीन हजार पांच सौ वर्गमील पाकिस्तान के पास जा सकता है । समझौते की यह शर्त भी प्रधान मंत्री जी की घोषणा के खिलाफ है ।

सभापति जी, मैं आपसे रोशनी चाहता हूं । यह सदन सरकार में नो कांफिडेंस मोशन नहीं ला सकता क्योंकि सरकार इस सदन के प्रति जिम्मेदार नहीं है लोक सभा के प्रति जिम्मेदार है । मैंने विचार किया कि क्या प्रिवलेज मोशन प्रधान मंत्री जी के खिलाफ इस प्लेज को तोड़ने के लिये, दिए हुए वचन को भंग करने के लिए लाया जा सकता है तो मुझे लगा कि स्ट्रिक्टली स्पीकिंग यह प्रिवलेज का ईश्यू नहीं है । तो फिर ऐसे मामले में हमारे पास इलाज क्या है, अगर सरकार संसद के, सदन के किसी पवित्र संकल्प को तोड़ दे . . .

श्री गोडे मुराहरि : गद्दार है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : . . . तो यह सदन क्या करे । क्या हम हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहेंगे । आखिर यह सदन जनता

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

के प्रति उत्तरदायी है, लाखों लोग, करोड़ों लोग हम से यह आशा करते हैं कि हमने जो संकल्प किया है हम उसे पूरा करेंगे।

मेरी आपसे प्रार्थना है कि आज की कार्यवाही में जो और चीजें हैं, जो और बिल हैं, कोई इंडस्ट्रियल रिलेशंस के बारे में बिल है, कोई प्रेस कौंसिल का बिल है, ये बिल रुक सकते हैं, इन पर बहस रोकी जा सकती है और सदन को इस बात का मौका देना चाहिए कि इस पर बहस करे कि क्या 3 मई के प्लेज को पूरा किया गया है। मैं साबित करूंगा कि पूरा नहीं किया गया है। सदन के उस ओर के सदस्य कह सकते हैं कि पूरा किया गया है, मगर इस बात पर बहस होनी चाहिए। यह मामला हम टाल नहीं सकते। आप कहेंगे कि प्रधानमंत्री वहां पर व्यस्त हैं, वह इस सदन में नहीं आ सकते, कच्छ के बारे में बहस होने वाली है। तो इसका एक रास्ता सुझाया गया था, प्रजा सोशलिस्ट पार्टी ने कहा था कि दोनों सदनों की मिलीजुली बैठक करे। कच्छ के मामले पर आपने देश के साथ विश्वासघात किया। काश्मीर पर पाकिस्तान का हमला होने के बाद भी आप कच्छ के समझौते से चिपके रहना चाहते हैं। यह गम्भीर परिस्थिति है और सदन को, संसद को, अपने कर्त्तव्य का पालन करना है। तो एक मिलीजुली बैठक, ज्वाइंट सेशन, बुलाया जा सकता है मगर प्रधान मंत्री जी ने वह बात ठुकरा दी और आज वह उस सदन में हैं और हम यहां औद्योगिक विवाद विधेयक पर, प्रेस कौंसिल बिल पर विचार कर रहे हैं। औद्योगिक विवाद विधेयक रुक सकता है, प्रेस कौंसिल का बिल जो अभी तक अलमारी में पड़ा रहा वह भी स्थगित किया जा सकता है, मगर इस पर बहस रोकी नहीं जा सकती है कि सरकार ने तीन मई के संकल्प का पालन किया है या नहीं किया है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप हमें बहस करने का मौका दें और फिर तब सदन की गरिमा बढ़ेगी, तब लोकतंत्र में जनता की निष्ठा कायम होगी। अगर संसद की प्रतिज्ञा को इस तरह से तोड़ा जायगा तो देश में लोकतंत्र नहीं रहेगा।

मुझे विश्वास है—आप सदन की प्रतिष्ठा के, मर्यादा के, रक्षक हैं, आपके हाथों में इस सदन के विशेषाधिकार हैं—आप बाकी की सारी कार्यवाही स्थगित कर के मेरे इस सुझाव पर बहस करने का मौका देंगे कि क्या 3 मई की प्रतिज्ञा को पूरा किया गया है।

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Sir, I have to make a submission in this matter for you to consider. In the other House—again I point out with all respect—a motion has been tabled by the Government to discuss this matter and, naturally, it will start, I think, to day or tomorrow. Now in this House there is no such motion whatsoever, and it is a legitimate complaint that a matter of such importance—we have divergence over this matter here in the Opposition also—is not being taken up here on the very first day, and the Government should have initiated a discussion in both the Houses at the same time deputing Ministers for the purpose. So far, in the programme given, there is no provision for such a discusion at all, and it is somewhat odd and unseemly that when that House will be discusing such a vital matter, we shall be discussing a back-log of Bills—the Industrial Disputes, Bill, the Press Council Bill, etc.—I think they can wait a little. Now I do not know why this House should be treated in this manner. Is it just because we have not got the privilege of tabling no-confidence motions and adjournment motions? It seems as though we are not interested in such an important matter and, Sir, I would ask you to consider how the country will think of us when in the other House the Kutch matter and various other matters of such great dimensions and importance are being discussed, we are discussing the amending Bills on Industrial Disputes and other matters—

not that they are not important. Therefore I think the Government has been completely misconceived in its approach in regard to this matter. With regard to other things, only I would like to say—I do not go into a discussion of them—I would like to say that there is an arbitration clause which makes vast chunks of Indian territory justiciable. Now that does not accord with the pledge given, and naturally Government should have come and explained its position. Now they take things for granted.

MR. CHAIRMAN: The Prime Minister is making a statement this afternoon.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: It is just a statement.

SHRI BHUPESH GUPTA: And we do not know what the statement is. Was it not right then to include in the List of Business that the statement will be made here? Therefore I point out that nothing is provided for here.

MR. CHAIRMAN: The Prime Minister is making the statement at 4 P.M. today.

PROF. M. B. LAL (Uttar Pradesh): Sir, while on the agenda papers it is said that the statement will be made by the Prime Minister, we are not assured that there will be a discussion on the question. We want a discussion on the question. Putting a few questions for clarification of points will not suffice.

MR. CHAIRMAN: When he makes the statement you can say all these things, you can say that you want a discussion.

شری فریدالحق انصاری (اتر پردیش) : جناب چیرمین صاحب - جو رویہ گورنمنٹ نے موجودہ حالت میں اختیار کر رکھا ہے وہ واقعی بہت تعجب خیز ہے - ایک طرف تو ہم یہ کہتے ہیں کہ - ہم امن چاہتے ہیں . .

श्री सभापति : आप कच्छ के मामले में कह रहे हैं। बाजपेयी साहब की जो बात थी उसी पर कह रहे हैं।

شری فریدالحق انصاری : جناب - ایک طرف تو ہم امن چاہ رہے ہیں - پیس فلی ہندوستان اور پاکستان کے معاملے کو طے کرنا چاہتے ہیں - آپ نے جو وعدہ کیا تھا - پارلیمنٹ کے سامنے بالکل واضح طریقہ کے اوپر س وعدہ کو آپ پورا نہیں کیا - اس کی خلاف ورزی کی - آپ نے بغیر پارلیمنٹ سے مشورہ کئے بغیر پارلیمنٹ کی اجازت لئے ہوئے پاکستان سے سمجھوتہ کر لیا - تو یہی ایک سب سے زیادہ زیادتی کی - پارلیمنٹ کے اوپر آپ نے کیا -

श्री सभापति : अन्सारी साहब, 4 बजे प्रधान मंत्री स्टेटमेंट करेंगे उस वक्त आप यह कह सकते हैं।

شری فریدالحق انصاری : ٹھیک ہے - اسٹیٹمینٹ کریں گے - اسٹیٹمنٹ تو وہاں کر رہے ہیں - یہاں کہتے ہیں - کہ اس وجہ سے ہم نے یہ سمجھوتہ کیا کہ ہم پیس فلی سیٹل کرنا چاہتے ہیں - اور دوسری طرف پاکستان نے کچھ کے اوپر حملہ کیا - جس طرح سے اپنے فوجی لوگوں کو شہری لباس میں سویلین لباس میں وہاں بھیجا اس کی تمام خبریں اخباروں میں آ رہی ہیں - وہ ہم اخباروں میں پڑھتے ہیں - ہمیں

[شری فریدالحق انصاری]
اخباروں سے معلوم ہوتا ہے اور جو اصلیت ہے وہ پتہ نہیں چلتی - تو ایک طرف یہ کہتے ہیں - اور دوسری طرف یہ کہتے ہیں - آخر کار ملک کا کیا حشر ہونے والا ہے -

†[श्री फ़रीदुल हक़ अन्सारी : (उत्तर प्रदेश): जनाब चेयरमैन साहब, जो रवैया, गवर्नमेंट ने मौजूदा हालत में अख्तियार कर रखा है वह वाकई बहुत ही ताज्जुबखेज है। एक तरफ तो हम यह कहते है कि हम अमन चाहते हैं. . .

श्री सभापति : आप कच्छ के मामले मे कह रहे हैं। वाजपेयी साहब की जो बात थी उसी पर कह रहे हैं।

श्री फ़रीदुल हक़ अन्सारी : जनाब। एक तरफ तो हम अमन चाह रहे हैं, पीसफुली हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मामले को तय करना चाहते हैं। आपने जो वायदा किया था पार्लियामेंट के सामने बिल्कुल वाहिद तरीके के ऊपर उस वायदे को आपने पूरा नहीं किया, उसकी खिलाफवर्जी की, आपने बगैर पार्लियामेंट से मशविरा किए, बगैर पार्लियामेंट की इजाजत लिये हुए, पाकिस्तान से एक समझौता कर लिया। तो यही एक सब से ज्यादा ज्यादती की, पार्लियामेंट के ऊपर आपने किया . . .

श्री सभापति : अन्सारी साहब, 4 बजे प्रधान मंत्री स्टेटमेंट करेंगे उस वक्त आप वह यह कह सकते हैं।

श्री फ़रीदुल हक़ अन्सारी : ठीक है, स्टेटमेंट करेंगे। स्टेटमेंट तो वहां कर रहे हैं। यहां कहते हैं कि इस वजह से हमने यह समझौता किया कि हम पीसफुली सेटिल करना चाहते हैं। और दूसरी तरफ पाकिस्तान ने काश्मीर के ऊपर हमला किया, जिस तरह से अपने फौजी लोगों को शहरी लिबास में, सिविलियन लिबास में, वहां भेजा उसकी तमाम खबरें अखबारों में आ रही हैं। वह हम अखबारों में पढ़ते हैं, हमें अखबारों से मालूम होता है और जो असलियत है वह पता नहीं चलती। तो एक तरफ यह कहते हैं और दूसरी तरफ यह कहते हैं। आखिरकार, मुल्क का क्या हश्र होने वाला है।]

† [ ] Hindi transliteration.

MR. CHAIRMAN: Mr. Murahari wants to raise some other point.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Before he proceeds I want your ruling on this.

MR. CHAIRMAN: My ruling is that I do not think it is a question of privilege, as yourself conceded. The Prime Minister is making the statement at 4 P.M. and you can raise this question at that time.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: How can I raise this question at that time? It is not for the Prime Minister to decide; it is for the House to decide. I do not want anything from the Prime Minister; I want you to take into consideration my suggestion. A solemn pledge has been broken and the Prime Minister is guilty of breaking that pledge. We cannot wait for the Prime Minister. He has betrayed the interests of the nation.

HON. MEMBERS: No. no.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: He has bartered away the honour of the country.

MR. CHAIRMAN: Now, Mr. Vajpayee, you have had your say.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: You allow the House to discuss it; I am prepared to convince you. Or you convince me whether the pledge has been broken or not.

(*Interruptions*)

MR. CHAIRMAN: Mr. Vajpayee, will you please sit down?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: I want you to consider . . .

MR. CHAIRMAN: Now I will say something and I cannot say something when you are standing. I have considered the matter. There is no question of privilege but I think there is a very good case for discussion, and this matter must be raised when the Prime Minister is here, and I would see that we have a discussion.

1 P.M.

श्री गोडे मुराहरि : (उत्तर प्रदेश): अध्यक्ष महोदय, पिछले दो तीन महीनों के अंदर जो जो घटनाएं हुई हैं वे यह साबित करती है कि यह सरकार वहां पर बैठने के लायक नही है। एक तो मैं कह सकता हूं ** * * । जिस ढंग से पार्लियामेंट के वचन को तोड़ कर यह कच्छ समझोता किया उसको लेकर यह कहा जा सकता है कि * * * । लेकिन इस के साथ साथ जो करतूत इसने किया है जो लोग यह कच्छ समझौते के खिलाफ अपनी आवाज़ उठाते थे उन लोगों को जेल में बन्द किया है और डिफेंस आफ इण्डिया रेगुलेशन को इस्तेमाल कर के उन को अन्दर किया गया है। डा० राम मनोहर लोहिया को कच्छ समझौते के खिलाफ आवाज़ अपनी उठाते थे उनको भी डिफेंस आफ इंडिया रेगुलेशन्स के अन्तर्गत जेल में ले जा कर रखा। साथ, साथ जो खाद्य स्थिति बिहार में उत्पन्न हुई है, उस के बारे में जो आन्दोलन चल रहा था बिहार मे, उस में हज़ारों लोगों के ऊपर पुलिस दमन चलाया गया । और पुलिस के जरिये उन पर गोली चलाई गई। यह कहना कि उन्होंने रेलवे स्टेशन के अन्दर आग लगाई और कुछ किया, यह नतीजा सिर्फ इसका है कि सरकार की तरफ से दमन किया गया . . .

**Expunged as ordered by the Chair.

MR. CHAIRMAN: Mr. Murahari, what are you driving at? Please sit down.

श्री गोडे मुराहरि : मैं चाहता हूं कि . . . . (इन्टरपशंन) हमारी सरकार को इसके ऊपर कोई न कोई कार्यवाही करनी चाहिये थी। लेकिन उस ने . . .

MR. CHAIRMAN: Mr. Murahari, I think you are disturbing the work of the House. You are disturbing the work of the House. I give you a chance. Please sit down.

SHRI G. MURAHARI: Mr. Chairman, the Government has lost the confidence of the people and it has no right to remain in power.

MR. CHAIRMAN: I name Mr. Murahari.

(The hon. Member Shri G. Murahari withdrew from the Chamber).

SHRI BHUPESH GUPTA: May I make a submission? Sir, you allowed him to speak on the subject and . . .

MR. CHAIRMAN: I did not know what he wanted to say. He began speaking something, I did not know.

SHRI BHUPESH GUPTA: They may be unpalatable thing to the Government.

MR. CHAIRMAN: Not unpalatable but absolutely wrong things.

SHRI BHUPESH GUPTA: He only invited attention to what is happening in Bihar, to people being arrested and such things. To say such things is not permissible.

MR. CHAIRMAN: But he should have informed me first. Mr. Vajpayee told me first and I allowed him.

[Mr. Chairman]

Mr. Bhupesh Gupta spoke to me and I allowed him. But Shri Murahari had not asked me and when I wanted him to sit. He did not and therefore, I have named him and I think I have done the right thing.

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, what you have done in your judgment, we cannot question. But I regret that we have to bring to the notice of the House these killings by the police and other things that are happening and lot of bad things that are happening and lot of bad things in the country as a whole . . .

AN. HON. MEMBER: It is controversial.

MR. CHAIRMAN: But there is such a thing as procedure. I should have been told what he wanted to say and he cannot just make a speech against this or that.

SHRI BHUPESH GUPTA: Then can we have some assurance Sir, that this matter will be taken up for discussion with proper notice?

MR. CHAIRMAN: When it is brought to my notice before and . . .

(Interruptions)

Order, order. We now pass on to the next item—Legislative Business.

श्रीमती सरला भदौरिया (उत्तर प्रदेश) : अध्यक्ष महोदय, . . .

MR. CHAIRMAN: We have passed on to the next item.

श्रीमती सरला भदौरिया : वे चले गए हैं। बिहार की जो स्थिति है. . .

श्री सभापति : मैं बिल्कुल इसका जिक्र नहीं करने दूंगा क्योंकि आपने इजाजत नहीं ली है। यह प्रोग्राम में नहीं है, प्रोग्राम के अलावा एजेन्डा में जिस चीज का जिक्र होता है उसका जिक्र करने से पहले मुझ से इजाजत ली जाती है। वाजपेयी साहब ने इजाजत ले ली थी।

श्रीमती सरला भदौरिया : विचार तो करना चाहिये।

श्री सभापति : अब आप तशरीफ रखें।

(Interruptions)

SHRI BHUPESH GUPTA: Without any disrespect to you, Sir, I think Mr. Murahari had a right case to place before the House and since you have named him to go out we also go out.

(Shri Bhupesh Gupta and some other hon. Members left the Chamber)

SHRI CHANDRA SHEKHAR (Uttar Pradesh): In spite of your ruling, Sir, many Members have been raising certain matters which are, of course, debatable and controversial. If they have to say something about the Patna firing and all these incidents, we have also to say about the sabotage in which the Communist Party and the Samyukta Socialist Party indulge. We have also to congratulate Thakur Prasad, the President of the Jana Sangh, who said that they are with the Government and . . .

MR. CHAIRMAN: Please sit down.

SHRI CHANDRA SHEKHAR: Mr. Chairman, one side is giving the picture and it goes to the Press, and we are not allowed to say all these things.

MR. CHAIRMAN: You will be allowed to say, provided you come and tell me what you have to say. If it is not on the agenda and you want to say something, then you have to come to me first. That is the position I took with the other Members and that is the position that I take with you. Now we pass on to the next item.